

प्रश्न- हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परम्परा का वर्णन करें?

अथवा

हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन परम्परा का सोदाहरण विवेचन कीजिए तथा इतिहास लेखन की त्रुटियों पर प्रकाश डालिए?

अथवा

हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन की परम्परा की चर्चा कीजिए?

अथवा

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा पर विचार करते हुए 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' अथवा 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' की प्रमुख विशेषताएं का वर्णन करें?

अथवा

हिन्दी साहित्येतिहास की लेखन-परम्परा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा अत्यधिक प्राचीन है। लेकिन आधुनिक काल में इसका प्रवर्तन 19वीं शताब्दी में हुआ। अन्य शब्दों में, हम कह सकते हैं कि आधुनिक काल में साहित्येतिहास लेखन के प्रति एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया गया और प्राचीन रचनाओं को आधार बनाकर एक सुव्यवस्थित इतिहास लिखने की कोशिश की गई। 19वीं शताब्दी से पूर्व भी कुछ कवियों और लेखकों ने इस प्रकार की पुस्तकें लिखी हैं, जिनसे हमें हिन्दी साहित्येतिहास सम्बन्धी कुछ विवरण प्राप्त होते हैं। हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से हम चार भागों में विभक्त कर सकते हैं-

- 1 . आरम्भिक काल
2. मध्य काल
3. विकास काल
4. आधुनिक काल

1. आरम्भिक काल-

इस काल में हम उन ग्रन्थों को समाविष्ट कर सकते हैं जिनमें हिन्दी के विभिन्न कवियों तथा उनकी रचनाओं का परिचय प्राप्त होता है। उदाहरण के रूप में, "चौरासी वैष्णवन की वार्ता", "दो सौ बावन वैष्णवन की बार्ता", "भक्तमाल" "कविमाला", "कालिदास हजार" आदि कुछ ऐसे ग्रन्थ हैं, जिनमें हमें विभिन्न कवियों के बारे में उपयोगी सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं। लेकिन इनमें प्रायः किसी धर्म अथवा सम्प्रदाय-विशेष की भावना से प्रेरित होकर ही कवियों का निर्देश दिया गया है। इसी सन्दर्भ में 'काव्य द्रुम', 'रसचन्द्रोदय', 'दिग्विजय भूषण' तथा 'सुन्दरी तिलक' आदि रचनाओं के नाम भी गिनवाए जा सकते हैं। भले ही, इन ग्रन्थों में इतिहास सम्बन्धी अधिक सूचनाएँ प्राप्त नहीं हुई, लेकिन ये हिन्दी साहित्य लेखन

में पर्याप्त सहायक हो सकते हैं। परन्तु हमें यह बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिए कि इन रचनाओं के काल-क्रम, सन्-संवत्, विषय-वस्तु आदि का कोई व्यवस्थित विवेचन नहीं किया गया। इसलिए इन्हें हम ऐतिहासिक रचनाएँ नहीं कह सकते। किसी भी साहित्य के इतिहास के लेखन के लिए अतीत के साहित्य का अनुसंधान, प्रायः रचनाओं की प्रामाणिकता, उनकी काल-क्रमानुसार ग्रन्थ सूची आदि का संग्रह भी आवश्यक है। हिन्दी इतिहास लेखन के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा यह है कि हिन्दी साहित्य का एक बहुत बड़ा भाग अनेक कारणों से नष्ट हो चुका है। कुछ ऐसी भी रचनाएँ हैं जो आज भी राज-पुस्तकालयों या निजी पुस्तकालयों में दबी पड़ी हैं। अतः यह आवश्यक है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास के लिए उपयोगी सामग्री की न केवल खोज की जाए, बल्कि उसका वैज्ञानिक विवेचन भी किया जाए। ऊपर जिन ग्रन्थों का उल्लेख किया गया है, उनमें केवल भक्त कवियों का ही परिचय दिया गया है। अतः ये ग्रन्थ साहित्येतिहास की परिधि में नहीं आ सकते। भक्त कवियों की प्रायः यह प्रवृत्ति रही है कि उन्होंने अपनी रचनाओं में अपने निजी जीवन की बहुत कम सूचना दी है। यही कारण है कि इन ग्रन्थों को हम केवल बाह्य साक्ष्य के रूप में ही स्वीकार कर सकते हैं।

2. मध्य काल-

(१). **गार्ता-द-तासी-** गार्सा द तासी यदि हिंदी साहित्य पर दृष्टि डालें तो हिंदी साहित्य का सबसे पहला इतिहास फ्रांसीसी विद्वान गार्सा द तासी ने **इस्त्वार द ला लितरेत्युर ऐंदुई ए ऐंदुस्तानी** नामक ग्रंथ लिखा था। उसका पहला भाग सन् 1839 में और दूसरा भाग सन् 1847 में छपा था। इसमें अंग्रेजी वर्णक्रम में लगभग सत्तर कवियों का विवरण है किंतु वह कालक्रमानुसार नहीं किया गया है। इसमें काल-विभाजन, युगीन-प्रवृत्तियों और परंपरा के विवेचन का कोई प्रयास नहीं किया गया है। अतः इसे 'इतिहास' की अपेक्षा 'वृत्त संग्रह' कहना अधिक संगत रहेगा। यह पुस्तक फ्रेंच भाषा में लिखी गई है।

(२). **शिवसिंह सेंगर-** इसके पश्चात् जो महत्वपूर्ण ग्रंथ निकला वह शिवसिंह सेंगर का **'शिवसिंह सरोज'** है। इसका रचनाकाल सन् 1883 है। इसमें कवियों की संख्या में वृद्धि हुई। इसमें लगभग एक हजार कवियों की कविताएं सम्मिलित हैं। मूलतः यह एक काव्य संग्रह है, किंतु इसमें अनेक कवि व कविताओं को इकट्ठा करने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया। बाद के कवियों के लिए यह स्रोत का काम करता है। परंतु यह दोनों संग्रह जीवनी रूप में ही रहे। इनमें विभिन्न कालों का विवेचन नहीं था।

(३). **जॉर्ज ग्रियर्सन-** जॉर्ज ग्रियर्सन ने पहली बार **द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान** में कवियों व लेखकों का कालक्रमानुसार वर्गीकरण किया। साथ ही साथ उनकी प्रवृत्तियों को उद्घाटित करने का प्रयास किया। जॉर्ज ग्रियर्सन का इतिहास लेखन अधिक ढांचागत है। ग्रियर्सन ने तत्कालीन युग के सांस्कृतिक परिवेश और प्रेरणा स्रोतों के उद्घाटन का भी प्रयास किया। वस्तुतः इसे हिंदी साहित्य का पहला इतिहास ग्रंथ कहा जा सकता है। इसमें करीब 925 कवियों की जानकारी दी गई है। उन्होंने अन्य संग्रहों के प्रति अपने मत भी निर्धारित किये। हिंदी साहित्य के इस ग्रंथ में 12 लेख हैं। ग्रियर्सन ने अत्यंत व्यापकता के साथ हिंदी साहित्य का विवेचन किया है। उन्होंने पथप्रदर्शक की भूमिका का निर्वहन किया।

(४). **मिश्रबंधु-** क्रमबद्ध इतिहास के रूप में सबसे पहला ग्रंथ **मिश्रबंधु विनोद (तीन-भाग)** सन् 1913 में प्रकाशित हुआ। तीन भाइयों- गणेश बिहारी, श्याम बिहारी मिश्र तथा शुकदेव बिहारी मिश्र ने संयुक्त परिश्रम करके इस ग्रंथ की रचना की। इसका चौथा भाग बाद में प्रकाशित हुआ। इसमें काल-विभाजन के साथ नागरी प्रचारिणी सभा की खोज के निष्कर्षों का पूर्ण समावेश कर दिया गया। इसमें लगभग पांच हजार कवियों का उल्लेख है। यह ग्रंथ सूचनाओं का अपार भंडार है, जो आगामी साहित्यकारों के लिए बहुत उपयोगी रहा।

3. विकास काल-

(1). **रामचंद्र शुक्ल-** रामचंद्र शुक्ल हिंदी का सर्वाधिक व्यवस्थित इतिहास आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित '**हिंदी साहित्य का इतिहास**' है। 1929 ई. में उन्होंने इसे प्रस्तुत किया। उन्होंने पूर्ववर्ती संग्रहों द्वारा प्राप्त हुए संग्रहों को व्यवस्थित क्रम दिया है। विस्तृत एवं वैज्ञानिक अध्ययन व दृष्टिकोण द्वारा उन्होंने समकालीन संदर्भ का विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने युगीन परिस्थितियों के संदर्भ में साहित्य के विकास-क्रम की व्याख्या करने का प्रयास किया है। शुक्ल जी ने जनता की चित्तवृत्ति के साथ-साथ साहित्य का संबंध जोड़ते हुए उसके क्रमिक विकास और परिवर्तन का आलेख प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त उसमें विशेष कवियों के काव्य-गुणों व उनके महत्व का भी सोदाहरण विवेचन किया गया है।

(२). **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी-** आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य के इतिहास को हिंदी साहित्य की भूमिका में प्रस्तुत किया है। द्विवेदी जी ने युगीन प्रभाव के एकांगी दृष्टिकोण पर आधारित धारणाओं का खंडन अपने साहित्य इतिहास के लेखन में किया और साथ ही परंपरा के महत्व को स्थापित किया। द्विवेदी जी ने हिंदी साहित्य के मध्यकालीन काव्य स्रोतों और परंपराओं का तथ्यपरक अध्ययन किया और उनका यह योगदान हिंदी साहित्य के लिए अभूतपूर्व है। उनकी इतिहास संबंधी अन्य रचनाएं भी प्रकाशित हुईं जिनमें '**हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास**, और '**हिंदी साहित्य का आदिकाल**' आदि शामिल हैं।

(३). **डॉ. रामकुमार वर्मा-** डॉ. रामकुमार वर्मा ने इतिहास लेखन में नवीन शोधों द्वारा उपलब्ध सामग्री को प्रस्तुत किया है। डॉ. वर्मा ने भक्तिकाल के साहित्य का ही आलोचनात्मक अध्ययन किया है। डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा लिखित '**हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास**' सन् 1958 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने विभिन्न कवियों के काव्य का विवेचन किया है।

(४). **बच्चन सिंह-** बच्चन सिंह का '**आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास**' ग्रंथ मूलतः साहित्यिक कृतियों पर आधारित है लेकिन उनका अपेक्षित पर्यावरण सर्वत्र दृष्टि में रखा गया

है। इसमें शुरू से ही भविष्योन्मुखता को लक्ष्य में रखने के कारण श्रेष्ठ साहित्यकार अपने आप रेखांकित हो उठे हैं।

(५). **विश्वनाथ प्रसाद मिश्र-** विश्वनाथ प्रसाद मिश्र जी के अध्ययन-लेखन का प्रधान क्षेत्र रीतिकाल रहा है। संस्कृत और रीतिकालीन काव्य शास्त्र का उन्होंने गंभीर अध्ययन किया। उन्होंने अपनी रचना '**हिंदी साहित्य का अतीत में इतिहास**' को काव्य पर और काव्य को इतिहास पर आरोपित करने की बजाय रचनाओं के भीतर से ही ऐतिहासिक तथ्यों की समानता दिखाने का कार्य किया है, जो अत्यंत प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय कार्य है।

(६). **गणपतिचंद्र गुप्त-** गणपतिचंद्र गुप्त ने अपने ग्रंथ 'साहित्यिक निबंध' में साहित्य के प्रायः सभी अंगों का विवेचन किया है। बड़े-से-बड़े आचार्यों द्वारा कही गई बात उन्हें ठीक नहीं जंची, तो उसके प्रति शंका करने में वे हिचके नहीं हैं। अपनी शंका को उन्होंने स्पष्ट रूप से प्रकट किया है।

(७) **डॉ. लक्ष्मी सागर वाषर्ण्य-** इन्होंने दो साहित्येतिहास ग्रंथ लिखे '**आधुनिक हिन्दी साहित्य**' (1850 से 1900 ई.) तथा '**आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका**' (1757 से 1857 ई.)। इन दोनों ग्रंथों में 150 वर्षों के हिन्दी साहित्य का मौलिक अध्ययन किया गया है। इनमें वाषर्ण्य जी ने भौगोलिक स्थितियों के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में तत्कालीन हिन्दी साहित्य का मूल्यांकन किया है।

(८.) **डॉ. नगेन्द्र-** हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा में डॉ. नगेन्द्र द्वारा सम्पादित, '**हिन्दी साहित्य का इतिहास**' एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। आज यह ग्रन्थ सभी शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के लिए सर्वाधिक उपयोगी ग्रन्थ माना गया है। सामूहिक प्रयास होने के कारण इस ग्रंथ में कुछ स्थलों पर दृष्टि भेद का होना स्वाभाविक है। फिर भी इसमें साहित्येतिहास लेखन के आवश्यक वैज्ञानिक दृष्टिकोण को ही अपनाया गया है।

4. आधुनिक काल-

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन का क्रम यहीं तक नहीं रुका। आज कुछ ऐसे शोध ग्रन्थ तथा समीक्षा ग्रन्थ भी लिखे गए हैं जो हिन्दी साहित्येतिहास की नवीन व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। इस सन्दर्भ में डॉ. भागीरथ प्रसाद मिश्र द्वारा रचित "हिन्दी साहित्य का इतिहास", डॉ. नगेन्द्र द्वारा रचित "भक्ति काव्य की भूमिका" डॉ. विजेन्द्र स्नातक द्वारा रचित "राधा वल्लभ सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य", डॉ. टीकम सिंह तोमर द्वारा रचित "हिन्दी बीर काव्य", डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र रचित "हिन्दी साहित्य का अतीत", डॉ. मोती लाल मनेरिया रचित "राजस्थान का पिंगल साहित्य" आदि कुछ उल्लेखनीय ग्रन्थ हैं। इसी

प्रकार डॉ. भगवती प्रसाद सिंह रचित "रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय", डॉ. सियाराम तिवारी द्वारा रचित "मध्यकालीन खण्डकाव्य" तथा डॉ. इन्द्रपाल सिंह द्वारा रचित "रीति काल का प्रबन्ध-काव्य" आदि कुछ मौलिक ग्रन्थ हैं जो हिन्दी साहित्य की विभिन्न काव्यधाराओं पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। इधर सन् 1986 में दो महत्वपूर्ण इतिहास ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ। इनमें से प्रथम है- डॉ. बच्चन सिंह द्वारा रचित "आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास" तथा दूसरा, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी द्वारा रचित "हिन्दी साहित्य और संवेदना का इतिहास"।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा काफी लम्बी है। निश्चय से इसका आरम्भ फ्रेंच विद्वान् गार्सी-द-ताँसी ने किया। आगे चलकर जार्ज ग्रियर्सन, शिवसिंह सेंगर तथा मिश्र बन्धुओं ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया। परवर्ती लेखकों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, डॉ. नगेन्द्र आदि ने नवीन दृष्टिकोणों और चिन्तन पद्धतियों द्वारा हिन्दी साहित्येतिहास लेखन को एक नवीन दिशा प्रदान की। साहित्येतिहास लेखन की यह प्रक्रिया आज भी निरन्तर जारी है। इधर प्रांतीय भाषाओं में कुछ साहित्येतिहास प्रकाशित हो चुके हैं। यथा- 'बिहार का हिन्दी साहित्य', 'पंजाब का हिन्दी साहित्य' तथा 'उत्तर प्रदेश का हिन्दी साहित्य'। राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा दिल्ली के हिन्दी साहित्य संबंधी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस दिशा में अनेक शोधार्थी प्रयत्नशील हैं। इसलिए कुछ विद्वान साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता पर बल दे रहे हैं।